ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

भारतीय संगीत को लोकप्रिय बनाने वाले विश्व विख्यात कलाकार

World Renowned Artist Who Popularized Indian Music

Paper Submission: 10/12/2021, Date of Acceptance: 20/12/2021, Date of Publication: 21/12/2021

शालिनी गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
संगीत गायन विभाग
मौलाना आज़ाद टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय संगीत न केवल हमारी संस्कृति की अमूल्य निधि है वरन यह संगीत विश्व के इन संगीतिक संस्कृतियों व कला संस्कृतियों की पोषक है; जिसने अपनी संवेदनाओं और मनोभावों को विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया।

भारतीय संगीत बहुत व्यापक विषय है। जिसने कई संगीतिक शैलियों को जन्म दिया भारतीय संगीत में विभिन्न प्रकार की विद्याओं का निर्माण किया गया। जैसे -

1. शास्त्रीय संगीत
2. उपशास्त्रीय संगीत
3. लोकसंगीत
4. सुगम संगीत (गीत, गज़ल, भजन)

इन सभी विद्याओं में गायन वादन व नृत्य के अलग-अलग कलाकार है जिन्होंने सिर्फ देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपने भारतीय संगीत की इन सभी विद्याओं को न केवल प्रसिद्ध किया बल्कि विश्व सद्भावना व शांति फैलाने में कारगर सिद्ध हुये।

इसका सबसे बड़ा उदाहरण शास्त्रीय संगीत के विश्व विख्यात् सितार वादक पं0 रविशंकर जी है जिन्होंने भारत, कनाडा, यूरोप तथा अमेरिका मे बैले तथा फिल्मों के लिये भी संगीत कम्पोज किया।

अमेरिका के प्रसिद्ध वायलिन वादक यहूदी केन्युहिन के साथ जुगलबन्दियों में भी विश्वभर का दौरा किया।

इसी तरह से उपशास्त्रीय संगीत में गायी जाने वाली "ठुकरी" विद्या को ठुकरी की रानी कही जाने वाली बनारस की गिरिजा देवी जी ने पूरे विश्व में बहुत प्रसिद्ध किया। इसी क्रम में पं. हन्नू लाल मिश्र जी ने उपशास्त्रीय विद्याओं चैती, कजरी, ठुमरी, होली को विश्व में अलग मुकाम दिलाया।

लोकसंगीत में तो कलाकारों का अथाह सागर है, भारत के हर प्रान्त का लोकसंगीत अलग-अलग है। उनको प्रस्तुत करने वाले कलाकारों की भी एक विशाल श्रेणी है। राजस्थान की गुलाबों सपेरा जी ने "कालबेलिया लोकनृत्य" को पूरे विश्व में एक अलग ही पहचान दिलाई है। अभी हाल ही में इनको "पद्म श्री" से नवाज़ा गया है। जैसलमेर के मांगणियारों ने उनके जमीन से जुड़े गानों को विश्व में फलक तक पहंुचाया है।

विश्वविख्यात ग्रैमी अवार्डेड पं0 विश्वमोहन भट्ट जी ने मांगणियारों के साथ जुगलबन्दी के अनेकानेक कार्यक्रम पूरे विश्व में प्रस्तुत किये है।

भारतीय संगीत में बहुत से शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक व सुगमसंगीत के कलाकार हुये जिन्होंने सिर्फ अपनी कला से लोगों का दिल जीता बल्कि विश्व शांति स्थापित करने में संगीत के माध्यम से बहुत सहायता की कुछ नाम यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ। उदाहरण के तौर पर - पं0 जसराज, पं0 किशन महाराज, पं0 बिरजू महाराज, गिरिजादेवी, पं0 राजन साजन मिश्र, उ0 जाकिर हुसैन, पं0 विश्वमोहन भट्ट, बेगम अख्तर, जगजीत सिंह, अनूप जलोटा, मालिनी अवस्थी आदि इन कलाकारों की प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ देखकर आज तमाम लोग पूरे विश्व से "भारतीय संगीत" सीखने व उसके द्वारा शांति व सुखद अनुभूति करने भारत के कई शहरों में आते है। उनमें "बनारस" मुख्य है।

Indian music is not only an invaluable treasure of our culture, but this music is the nurturer of these musical cultures and art cultures of the world; Who presented his feelings and emotions in different dimensions. Indian music is a very broad subject. Which gave rise to many musical styles, different types of disciplines were created in Indian music. like –

1. Classical Music
2. Classical Music
3. Folk Music
4. Easy Music (Geets, Ghazals, Bhajans)

In all these disciplines, there are different artists of singing, playing and dancing, who not only made all these disciplines of Indian music famous not only in the country but also abroad, but proved effective in spreading world harmony and peace. The biggest example of this is the world famous sitar player of classical music, Pt. Ravi Shankar, who also composed music for ballets and films in India, Canada, Europe and America.

He also toured around the world in jugalbandi with the famous American violinist Jew Kenyuhin. In the same way, Girija Devi of Banaras, who is called the Queen of Thukri, made the "Thukri" sung in ecclesiastical music very famous all over the world. In this sequence, Pt. Hannu Lal Mishra gave a different position to the sub-classical disciplines of Chaiti, Kajri, Thumri, Holi in the world. There is a vast ocean of artists in folk music, the folk music of every province of India is different. There is also a huge range of artists presenting them. Gulab Saper ji of Rajasthan has given "Kalbelia folk dance" a different identity in the whole world. Recently, he has been awarded the "Padma Shri". The Manganiyars of Jaisalmer have brought their songs related to the land to the world. World famous Grammy Awardee Pt. Vishwamohan Bhatt ji has presented many programs of Jugalbandi with Manganiyars all over the world.
There have been many classical, classical, folk and smooth music artists in Indian music, who not only won the hearts of people with their art, but also helped a lot in establishing world peace through music, I am presenting some names here.
For example - Pt. Jasraj, Pt. Kishan Maharaj, Pt. Birju Maharaj, Girijadevi, Pt. Rajan Sajan Mishra, U. Zakir Hussain, Pt. Vishwamohan Bhatt, Begum Akhtar, Jagjit Singh, Anup Jalota, Malini Awasthi etc. Many people come to many cities of India to learn "Indian Music" from all over the world and feel peace and happiness through it. Among them "Benaras" is the main one.

मुख्य शब्द भारतीय संगीत, विश्वसंगीत, कलाकार, वैश्विक शांति, भारतीय संस्कृति
Keywords Indian Music, World Music, Artists, Global Peace, Indian Culture.

प्रस्तावना

भारतीय संगीत न केवल हमारी संस्कृति की अमूल्य निधि है वरन् यह संगीत विश्व के इन संगीतिक संस्कृतियों व कला के संस्कृतियों की पोषक है। जिसने अपनी संवेदनाओं और मनोभावों को विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया।

भारतीय संगीत हो अथवा पश्चात्य संगीत इसका आदिकाल से जन जीवन के साथ सम्बन्ध रहा है। ‘‘आदि मानव की संगीत प्रियता इसकी स्वाभाविक कला प्रियता का अभिन्न अंग है। स्वयं भारत में संगीत कला साधना प्रागौतिहासिक काल से आधुनिक काल तक चली आ रही है, इसका ‘‘चतुर्वे-चक्षुम’’ प्रमाण प्राचीन षिल्पकृतियों से उत्पन्न होता है। संगीत का पल्लवन जन जीवन के माध्यम से निरन्तर होता आया है, इसमें संदेह लेश नहीं है।

पणिनि ने ‘साम’का अन्तर्भाव ‘दृष्ट साहित्य के अन्तर्गत किया है, इसका यही अभिप्राय लिया जा सकता है।

‘‘ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ ‘संगीत’ के आधारभूत तत्व नाद को सम्पूर्ण जगत में व्याप्त व श्रष्टि का कारण होने से तथा प्राणवायु से सीधा सम्बन्धित होने के कारण योग साधना के समान ही ब्रह्म की उपासना का साधन तथा ‘नादब्रह्म’ के रूप में उपास्य तत्व स्वीकार किया है।’’

भारत एक धर्म प्रधान देश है। भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श की भाव भूमि पर प्रवाहित होती रही है तथा उसका प्रयोजन लोक कल्याण रहा है।

इसके कण-कण में राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर जैसे महापुरूषों की आत्मा समाई है। सत्य, अंहिसा, ब्रह्मचर्य अस्तेय और उपरिग्रह के पंच महाब्रतों को इस देश के निवासी युगों से आत्मसात् करते आ रहे है। आज जहाँ चारों ओर बर्बरता फैली है वहीं शांति का संदेश पहुंचाने वाला मात्र यही देश है। जिसका प्रमुख माध्यम यहाँ का संगीत है। अमेरिका जैसे सर्व साधन सम्पन्न देश के निवासियों का भारतीय संगीत व योग की ओर आकर्षित होने का यही एक मात्र प्रमुख कारण है।

‘‘विश्व प्रसिद्ध वायलिन वादक ‘यहूदी मेनुहिन’ने एक भेंट वार्ता में बताया - ‘‘भारतीय संगीत में एक प्रकार की चंचलता का अभाव है। इसमें एक शांति है, धीमापन है। पश्चिमी देशों के जीवन की सारी रचना एक तेज रफ्तार से चलने वाले पहिये पर खड़ी है। हमारे यहाँ एक भाग दौड़ है और इस दौड़ से थककर बहुत से तरूण हांफ रहे है। उन्हें शान्ति और धीमेंपन की निश्चिन्नता मिलती है, इसलिये वे केवल भारतीय संगीत में ही नहीं बल्कि भारतीय योग में भी रूचि रखते है। भारत के गायकों, वादकों और नर्तको ने संगीत की आत्मा को पहचाना है, जबकि इधर पश्चिम में संगीत के शरीर को संजाने संवारने का काम ज्यादा हुआ है।’’

भारतीय संगीत के साधकों व आराधकों का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति तथा परमात्मा से सम्बन्ध स्थापित करना रहा, अतः उन्होंने संगीत कला को भी उसी लक्ष्य की ओर उन्मुख किया। मुरली की एक तान पर गोपियों को बेसुध बना देने वाले बंशीधर की परम्परा ही तो आज का भारतीय संगीत है।

"डॉ. वासुदेव षरण अग्रवाल" ने यथार्थ ही लिखा है "जीवन रूपी संगीत ही नाद ब्रह्म या वागदेवी की वीणा है, जिसके सप्तक में विश्व के आनन्द की सप्तधारायें मूर्त रूप ग्रहण करती है। संगीत की साधना वही है, जिसके फलस्वरूप मानव का मन उस उच्चतर सूक्ष्म नाद का अनुभव करने योग्य बन सकें।"

भारतीय संगीत बहुत व्यापक विषय है। जिसने कई सांगीतिक शैलियों को जन्म दिया भारतीय संगीत में विभिन्न प्रकार की विद्याओं का निर्माण किया गया है। जैसे-

1. शास्त्रीय संगीत
2. उपशास्त्रीय संगीत
3. लोकसंगीत
4. सुगम संगीत (गीत, गज़ल भजन)

इन सभी विद्याओं (गायन, वादन, नृत्य) के अपने प्रतिष्ठित कलाकार है, जिन्होंने अपनी कला को सिर्फ साधा ही नहीं अपितु विश्व ख्याति तक पहुँचाया है। और इन कलाकारों को देश व विदेश तक चर्चित करने में, "भारत सरकार के प्रतिष्ठित संस्थान "भारतीय सांस्कृतिक सम्बद्ध परिषद" (Indian council for Cultural Relations) जो कि अपने छोटे नाम से अधिक जानी जाती है, का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। ICCR देश विदेश में भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार और श्रोताओं को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती चली आ रही है।

भारत के महानगरों जैसे दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई आदि के पश्चात् सर्वाधिक विदेशी पर्यटक उत्तर प्रदेश के वाराणसी (काशी) नगर में आते है, और भारतीय धर्म संस्कृति संगीत आदि विषयों पर जानकारी प्राप्त करते है। संगीत में, वे अधिकतर तबला या सितार यदा-कदा सारंगी या बाँसुरी भी सीखते है। ध्रुपद मेला, हनुमान जयन्ती या कोई अन्य संगीत समारोह हो, ये विदेशी पर्यटक बड़ी संख्या में दिखलाई पड़ते है।

किसी नवीन संस्कृति, भाषा, संगीत, बोलचाल, पहनावा-ओढ़ावा वाले देश में सांगीतिक घुसपैठ के लिये संगीत के उस श्लोक का स्मरण करना होगा-

"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते", इस श्लोक के बाद में आये नृत्य को पहले कर देना चाहिये क्योंकि संगीत की नृत्य विद्या, जो मूलतः दृश्य कला है, में सर्वसाधारण को अतिशीघ्र आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता निहित है। महान नर्तक उदय शंकर एवं रामगोपाल ने इस जादुई प्रभाव को जान लिया था बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षो में अपनी अपनी नृत्य मण्डलियों के साथ इन कलाकारों ने यूरोप के विभिन्न देशों तथा अमेरिका में अपनी कला के माध्यम के भारतीय नृत्य संगीत को ख्याति दिलाई।

पिछले पाँच दशकों मे न जाने कितने छोटे-बड़े भारतीय कलाकार अमेरिका और यूरोप के विभिन्न देशों में आते जाते रहे है। वरिष्ठ संगीतज्ञों में उस्ताद अली अकबर खां, उस्ताद अल्लारख्खा, पं. सपन चौधरी, उस्ताद जाकिर हुसैन, भारत रत्न पं. रवि शंकर का नाम तो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पंडित जी ने कनाडा, यूरोप तथा अमेरिका में बैले तथा फिल्मों के लिये भी संगीत किया। अमेरिका के प्रसिद्ध वायलिन वादक 'यहूदी मेन्युहिन' के साथ जुगल बन्दियों में भी विश्व भर का दौरा किया।

"अमेरिका में उ. अली अकबर खाँ ने "अली अकबर स्कूल ऑफ म्यूजिक" की स्थापना करके तथा उसके बैनर के तले सैकंडों अमेरिकियों को भारतीय संगीत की शिक्षा देकर संगीत की अतुलनीय सेवा की है।"

उ. जाकिर हुसैन के तबला-वादन का भारत जैसा जादू अमेरिका में भी है। भारत रत्न

पं. रविशंकर जी ने अपने जीवन के अन्तिम अनेक वर्ष अमेरिका में ही बितायें। 50-60 दशक में जब बिटिल्स बन्धुओं ने पंडित जी की शिष्यता प्राप्त की तो उनको अपार ख्याति मिली।

"लंदन में कई भारतीय संगीतज्ञ स्थाई रूप से रह रहे है। उनमें उ. विलायत खाँ परम्परा के श्री महमूद नदीम, बनारस घराने के संजू सहाय तथा दिल्ली घराने के श्री सरवर साबरी मुख्य है। लन्दन स्थित 'भारतीय विद्या भवन'में अनेक संगीतज्ञ गुरू कार्यरत है। जो भारतीय संगीत के संरक्षण, प्रचार, और देशी संगीत के विदेशी श्रोताओं के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।"

महर्षि महेश योगी जी ने गांधर्व वेद के नाम से शास्त्रीय संगीत को पोषित किया, आपने विश्व में शान्ति का संदेश देने के लिये संगीत को माध्यम बनाया। आपने सम्भवतः 1987 में एक वृहत् योजना बनाई और विश्व के अनेक देशों में "Gandhrva Veda Concert For World Peace" के बैनर तले संगीत के कार्यक्रम आयोजित किये। जिनमें 2-2, 3-3 संगीतज्ञों की टोली भ्रमण कर के कार्यक्रम दिया करती थी इसमें भाग लेने वाले कुछ कलाकार इस प्रकार हैः-

प. राजन साजन मिश्र, पवार बन्धु, गुंदेचा बन्धु, पं. देबू चौधरी, उमाशंकर मिश्र, श्रीमती सुमित्रा गुप्ता, प्रो. रूप कुमार सोनी, प्रो. मुकुन्द भाले, पं. शान्ताराम कशालकर आदि।

शास्त्रीय संगीत की बात करें तो बहुत से ऐसे नाम है जिनका विस्तृत वर्णन करना सम्भव नहीं परन्तु 'संगीत मार्तण्ड पं. जसराज'का अमूल्य योगदान हम कभी नहीं भूल सकते, जिनको शायद कोई हो जो

नहीं जानता हो। संगीत को ईश्वर से जोड़कर दी जाने वाली उनकी प्रस्तुतियों ने तो हमारे भारतीय संगीत की एक अलग ही पहचान पूरे विश्व में बनाई है।

उपशास्त्रीय संगीत को विश्व विख्यात करने में सबसे महत्वूपर्ण योगदान शोभा गुर्टू जी, पं. छन्नूलाल मिश्रा जी व "ठुमरी की रानी" कही जाने वाली विदुषी श्री गिरिजादेवी जी का है। जिन्होंने अपने उपशास्त्रीय गायन कजरी, चैती, ठुमरी होली आदि को विश्व में महत्व दिलाया और अपने भारतीय संगीत को पहचान दिलाई।

इसी क्रम में बात जब भारतीय संगीत की आये तो भारत का लोकसंगीत कैसे अछूता रह सकता है। संगीत का जन्म ही मानव सभ्यता से हुआ है। मानव के जन्म से लेकर मृत्यु तक गाये जाने वाले संस्कार गीतों में, मेले, त्योहार, ऋतु आदि पर बने गीतों में माटी की खुशबू होती है। और ये गीत सम्पूर्ण भारत के अलग-अलग प्रान्त में उनकी मूल भाषाओं में गाये जाते है। इसी के साथ-साथ इसमें प्रयोग होने वाले वाद्ययन्त्र और वेशभूषा भी अलग-अलग होती है। साथ ही इनके नृत्य भी अलग होते है। आज भारत का लोक संगीत सर्वव्याप्त है और यह सम्भव हो पाया है इनको प्रसिद्धि दिलाने वाले गायन, वादन और नृत्य के कलाकारों की वजह से। जब बात करें लोक संगीत की तो उत्तर प्रदेश के ब्रज की होली और रसिया बहुत ही गाये जाते है। वहां पर होने वाले 'चरकुला नृत्य'की बहुत सी प्रस्तुतियाँ देने कलाकार पूरे विश्व में जाते है। राजस्थान की लोकसंगीत परम्परा बहुत ही विस्तृत है, यहाँ पर लंगे माँगणियारों द्वारा जैसलमेर में गाये जाने वाले गीतों का नाम तो पूरे विश्व में है। प्रसिद्ध मोहन वीणा वादक व ग्रैमी अवार्ड विजेता पं. विश्व मोहन भट्ट जी ने मांगणियारों के साथ मिलकर अनेकानेक प्रस्तुतियों दी है। यहाँ की मांड गायकी को पं. चिरन्जी लाल जी, डॉ. सुमन यादव जी और पं. हनुमान सहाय जी ने विश्व विख्यात किया है।

पद्मश्री श्री गुलाबो सपेरा जी ने "कालबेलिया" नृत्य को विश्व शिखर पर पहुँचाया है। इसी प्रकार भारत में लोक के कलाकारों की एक विस्तृत श्रृंखला है जिन्होनें भारत की मिट्टी से जुड़े गीतों को विश्व में स्थान दिलाया।

जब बात करें सुगम संगीत की तो कुछ कलाकार है जिनका नाम अपने आप ही मानस पटल पर स्थापित हो जाता है। उनमें से कुछ निम्न प्रकार है- लता मंगेश्कर जी (फिल्म संगीत), गज़ल सम्राट "श्री जगजीत सिंह जी" भजन सम्राट अनूप जलोटा जी और भी कई अन्य जैसे कि हरिहरन जी, सोनू निगम जी इत्यादि ने विश्व के लगभग सभी देशों में अपनी प्रस्तुतियाँ दी है।

इस तरीके से भारतीय संगीत के अनगिनत कलाकार है जिन्होंने अपनी कढ़ी साधना व लगन से भारतीय संगीत को विश्व विख्यात किया और संगीत के माध्यम से विश्व शांति संदेश भी पहुँचाया।

विश्व में संगीत के द्वारा शांति फैलाने के उद्देश्य से 21 जून को विश्व संगीत दिवस बनाया गया, फ्रांस में सर्वप्रथम इसकी शुरूआत हुई। विश्व संगीत दिवस को मनाने का उद्देश्य अलग-अलग तरीके से लोगों को संगीत के प्रति जागरूक करना व विश्व के संगीत के कलाकारों को एक अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर लाकर विश्व एकता तथा विश्व शांति का संदेश सारी दुनिया को देना भी है।

"अभी हाल ही में लखनऊ में 20 अप्रैल 2019 को आयोजित हुये "पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत समारोह" में 17 देशों एवं भारत के 11 राज्यो से पधारे 168 संगीतज्ञों की लाजवाब सामूहिक प्रस्तुतियों ने श्रोताओं का दिल जीत लिया।"

अध्ययन का उद्देश्य

परिषद के मुख्य उद्देश्य और गतिविधियाँ निम्न प्रकार हैः-

1. विश्व के देशों में सांस्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ़ करना।
2. भारत का अन्य देशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करना।
3. विश्व के अन्य देशों से सांस्कृतिक आदान-प्रादन को बढ़ावा देना।
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।"

निष्कर्ष

आज सारी दुनिया विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ी है, परन्तु संगीत लोगों के दिलों को जोड़ता है। महात्मा गाँधी के प्रिय भजनों 'रघुपति राघव'एवं 'वैष्णवजन'की आज भी पूरे विश्व में भारतीय संगीत के कलाकारों द्वारा गाये जा रहे है।

भारतीय संगीत के द्वारा विश्व शांति बनाने में कलाकारों ने अपना सम्पूर्ण जीवन दिया, संगीत उनकी आत्मा में बसता है। संगीत ही एक ऐसी भाषा है जो दिलों को और आत्माओं को जोड़ती है। इस संदर्भ में ये पंक्तियाँ बहुत उचित लगती है।

"संगीत को न रोके कोई दीवार, संगीत जाये सरहद के पर।
संगीत माने न धर्म जात, संगीत से जुड़ी कायनात
संगीत की न कोई जुबान, संगीत में है गीता कुरान
संगीत में है अल्ला हो राम, संगीत में दुनिया तमाम"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ-8, डॉ. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे।*
2. *भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली, पृष्ठ-188, डॉ. मधुबाला सक्सैना।*
3. *निबन्ध संगीत, "संगीत साधना का आध्यात्मिक पक्ष", पृष्ठ-306, लक्ष्मीनारायण गर्ग।*
4. *निबन्ध संगीत, "संगीत साधना का आध्यात्मिक पक्ष", पृष्ठ-307, लक्ष्मी नारायण गर्ग ।*
5. *संगीत पत्रिका, दिसम्बर 2014, "देशी संगीत और विदेशी, श्रोता, पृष्ठ-49।*
6. *संगीत पत्रिका, दिसम्बर 2014, "देशी संगीत विदेशी श्रोता (आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव), पृष्ठ-49*
7. *संगीत पत्रिका, दिसम्बर 2014, देशी संगीत विदेशी श्रोता (आचार्य गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-50*
8. *https://hastakshep.com/old/21-जून-विश्व-संगीत-दिवस-दिलों-तथा-सरहदों-को-जोड़ता-है-संगीत/cid3311616.htm*
9. *https://hastakshep.com/old/21-जून-विश्व-संगीत-दिवस-दिलों-तथा-सरहदों-को-जोड़ता-है-संगीत/cid3311616.htm*